प्रभु महावीर ने नाव में यात्रा करने की आज्ञा प्रदान की। उन्होंने अनेकों वार वैशाली से राजगृही तक आते हुए नाव द्वारा गंगा पार की थी। इस के बारे में आगमों में प्रमाण उपलब्ध हैं। भगवान महावीर के निर्वाण के वाद सभी मौर्य सम्राटों ने जैन धर्म के विदेशों में फैलाने का प्रयत्न किया। इन समारोहों में सम्प्रदायिकता का उल्लेख जैन इतिहास में सन्मान से लिया जाता है। इस के बाद उज्जैन में कालकाचार्य को अपनी बहिन साध्वी सरस्वती की रक्षा के लिए ईरान जाना पडा। इस तरह ईरान देश के राजाओं में जैन धर्म फैला। यह घटना ईसा पूर्व २ सदी की है। उस समय उज्जैन में गर्दभिल्ल का राज्य था। आचार्य ने इस राजा को हटा कर पहले शकों को गद्दी पर वैठाया गया। फिर शक जव प्रजा का शोषण करने लगे, तो उन्होंने अपने भानजे चन्द्रगुप्त को उज्जैन का शासन दिया। कालकाचार्य बहुत प्रभावक आचार्य थे। उन्होंने स्वयं स्वर्ण भूमि (वर्मा), जावा, सुमात्रा, इंडोनेशिया तक जैन धर्म का झंडा वुलंद किया।

फिर जैन धर्म से संरक्षण मिलना वंद हो गया। मध्य काल से मुस्लिम काल तक जैन धर्म सिमट कर भारत तक सीमित रह गया। इस काल में जैन धर्म का दूसरे धर्मों व राजाओं ने काफी नुकसान पहुंचाया।

जैन धर्म का साहित्य विदेशों में १८वीं सदी में पहुंचा। १९वीं सदी में अमेरिका में विश्व धर्म संस्था शिकागो में आयोजित हुआ, जिस में श्वेताम्बर आचार्य श्री आत्मा नंद जी महाराज ने वंवई के एक वैरिस्टर श्री वीर चंद राघव जी गांधी को जैन धर्म का प्रतिनिधि बना कर भेजा।

आचार्य श्री आत्मानंद जी महाराज प्राचीन मुनि परम्परा का पालन करते हुए स्वयं न गए। यह वही कान्फ्रेंस थी, जिस में विवेकानंद जी ने हिन्दु धर्म का प्रतिनिधित्व

किया था। यह कान्फ्रैंस में श्री वीरचन्द राघव गांधी सफल वक्ता थे। वह लम्बा समय अमेरिका में प्रवचन देते रहे। अमेरिका के स्थानीय लोग उनके भक्त बन गए। लोगों को पहली बार पता चला कि जैन धर्म एक स्वतन्त्र धर्म है, यह हिन्दू धर्म से निकला नहीं, ना ही बौद्ध धर्म की शाखा है।

पर इस प्रचार का असर लम्बे समय तक रहा। पुनः बैरिस्टर चम्पतराय ने इंगलैंड में धर्म प्रचार किया। पर कोई भी साधु विदेश में नहीं गया। एक श्वेताम्बर मुनि श्री चित्रवानु ने १९७० में वाहन प्रयोग कर अमेरिका में पहुंचे। २ वर्ष तक मुनि भेष में रहने के पश्चात वह गृहस्थ कोष में आ गए। पुनः धर्म प्रचार में जुट गए। जो आज भी गुरूदेव नाम से जाने जाते हैं। हजारों की संख्या में अमेरिकन उन के श्रावक हैं। उन्होंने ३० से ज्यादा अंग्रेजी भाषा में ग्रंथ लिखे हैं।

प्रथम सार्थक यत्न :

आखिर समस्त जैन समाज का चिंतन इस मामले में प्रारम्भ हुआ। मुनि लोग धर्म प्रचार करना चाहते थे, पर वाहन के मामले में कोई सहमति नहीं थी। इस मामले में सर्वप्रथम क्रांतिकारी कदम राष्ट्रीय संत उपाध्याय श्री अमर मुनि जी महाराज ने उठाया। उन्होंने विश्व धर्म सम्मेलन के आचार्य सुशील कुमार जी महाराज को विदेशों में धर्म प्रचार की आज्ञा दी। इस यात्रा का इतना विरोध हुआ कि उन्हें अपनी परम्पराओं से अलग कर दिया गया। उन्होंने अर्हत जैन संघ की स्थापना की। अंतराष्ट्रीय महावीर जैन मिशन के माध्यम से एक पलेटफार्म बनाया। इस मिशन में समस्त विश्व के शाकाहारी व जैन धर्म के सभी सम्प्रदायों के श्रावकों को लिया।

आचार्य श्री सुशील मुनि जी विश्व धर्म संस्था के

संस्थापक थे। उनकी संस्था विश्व प्रसिद्ध थी। सभी संसार के धार्मिक नेता उनसे परिचिंधत थे। संस्था के सम्मेलन भारत में होते रहे। इस की शाखाएं विदेशों में भी थीं। वह प्रमाणिक आचार्य थे। पहले ही भ्रमण में वह संसार के विभिन्न देशों में गए। वहां उन्होंने जैनों को संगठित किया। वह पहले गैर राजनीतिज्ञ थे जिन्हें पोप ५ ने रोम में सिहांसन से उतर कर सम्मानित किया। वह पहले धार्मिक नेता थे जिन्हें संयुक्त राष्ट्र संघ ने महावीर का संदेश सुनाने के लिए बुलवाया था। भगवान महावीर निर्वाण शताब्दी में जिन चार मुनियों का प्रमुख हाथ था वह थे : श्री सुशील कुमार जी महाराज, मुनि श्री नथ मल्ल (महाप्रज्ञ) मुनि श्री विद्यानंद जी महाराज, मुनि श्री जनक विजय जी। आचार्य सुशील कुमार जी महाराज ने जैन इतिहास में वह कार्य किये, जिसके लिए वह हमेशा याद किए जाऐंगे।

आचार्य श्री सुशील कुमार जी ने हजारों अमेरिका निवासीयों और १० लाख प्रवासीय जैनियों को प्रभु महावीर का संदेश सुनाया। उन्हें ध्यान, पर्यावरण, अहिंसा, निशस्त्रीकरा जैसे सिद्धातों के वारे मे समझाया। जैन धर्म, दर्शन, मंत्र, विज्ञान, आदि विषयों पर विभिन्न विश्वविद्यालयों ने जैन धर्म पढ़ाना शुरू किया। उन्होंने अपने जीवन काल में ५० जैन केन्द्र, ३५ जैन मंदिर और अनेकों संस्थाओं व अंतराष्ट्रीय सम्मेलनों के माध्यम से जैन धर्म का प्रचार किया।

इनका मुख्य कार्यालय न्युजर्सी में स्थापित हुआ। जहां १०८ ऐकड़ भूखण्ड पर जैन तीर्थ सिद्धाचलम की स्थापना आचार्य श्री सुशील कुमार जी महाराज ने विदेशी भूमि पर की। जो इस सदी की महान इतिहासक घटना थी। इस प्रकार जैन धर्म यूरोप व एशिया में फैला।

उनकी सफलता को देखकर जैन धर्म के अन्य

समझ आया। इस समाज में विकास की अथाह संभावनाएं छुपी हैं। प्रचार के हर माध्यम को हम समाज अपनाते समय अपनी प्राचीन परम्परा को सुरक्षित रखे हुए हैं। इस का सत्यरूप उस समारोह वर्ष में देखने को मिला जव हमें हर स्थान पर गुरूओं ने सम्मानित किया। जैन धर्म में भगवान महावीर का संदेश है कि "मनुष्य वही शूरवीर हैं जो धर्म में शूरवीर् है।" विनय धर्म का मूल है। विनयवान व्यक्ति हर स्थान पर प्रशंसा पाता है। प्रभु महावीर के यह सिद्धांत हमारे जीवन के कीर्ति स्तंभ हैं।

इस प्राकरण में मैंने निर्वाण महोत्सव पर हुए कुछ महत्वपूर्ण कार्यों का सूक्ष्म व सरल विवेचन करने की चेष्टा की है। इस महोत्सवों की कड़ी में कई काम अंतराष्ट्रीय स्तर पर हुए। जिस में आचार्य श्री सुशील कुमार जी महाराज की विदेश यात्रा थी।

आचार्य तुलसी जी ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अहिंसा और शांति के लिए कार्य करने वाले के लिए अणुव्रत अवार्ड की स्थापना हुई। इस अवार्ड से अहिंसा व अणुव्रतों के क्षेत्रों में कार्य करने वालों का जय तुलसी फाउंडेशन द्वारा सम्मान किया जाता है। इसी वर्ष भारतीय ज्ञान पीठ ने जैन प्रदर्शनी का निर्माण किया। आचार्य तुलसी जी, व स्थानकवासी परम्परा की कई संस्थाओं ने आगम प्रकाशन का कार्य शुरू किया। इन प्रकाशनों में जैन साहित्य विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित हाने लगा। श्री तारक जैन ग्रंथालय, भारतीय ज्ञान पीठ, सन्मति ज्ञान पीठ संस्थाओं ने जैन साहित्य को काफी वडी मात्रा में प्रकाशित किया। भारतीय ज्ञान पीठ ने जैन स्थापत्य व कला के नाम से ३ ग्रंथों का प्रकाशन हुआ। जिसका विमोंचन तत्कालिन प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने किया। जैन प्रतिमाओं, कलाकृतियों व हस्तलिखितों की

प्रदर्शनी का आयोजन राष्ट्रीय व अंतराष्ट्रीय स्तर पर किया गया।

भगवान महावीर का सचित्र जीवन चारित्र आचार्य श्री यशोविजय जी ने तैयार करवाया। दिगम्बर जैन तीर्थों का परिचय देने वाले ग्रंथों का प्रकाशन श्री दिगम्बर जेन तीर्थ समिति ने किया। इस ग्रंथ के ५ खण्ड थे। यह सभी सचित्र व विस्तारपूर्वक थे। गुजराती साहित्य विपूल मात्रा में प्रकाशित हुआ। हमारी समिति ने पंजाबी भाषा में ग्रंथ प्रकाशन शुरू किया। इस में अर्धमागधी से शास्त्रों का पंजाबी अनुवाद स्वतन्त्र लेखन, कथा साहित्य समिल्लित था। उस का प्रकाश प्रारम्भ हुआ।

भगवान महावीर का परिचय देने वाले अनेकों वृहद चित्र बने। इन में दो का उल्लेख करना जरूरी है। पहली फिल्म थी "महासती मैना सुन्दरी" दूसरी फिल्म थी "जैन तीर्थ दर्शन"। भारतीय ज्ञान पीठ ने भगवान महावीर के जीवन पर एक डाकूमैंटरी फिल्म तैयार की। इसी प्रकार भगवान महावीर का एक जीवन चारित्र आचार्य श्री देवेन्द्रमुनि जी ने लिखा। जिस में श्वेताम्बर व दिगम्बर सामग्री का प्रयोग किया गया था। इस ग्रंथ का नाम था : "महावीर : एक अनुशीलन"। ऑडियों, विडियो भजनों के रिकार्ड सभी कम्पनियों ने निकाले। तव कम्प्यूटर का भारत में प्रवेश नहीं हुआ धा। तव कम्प्यूटर युग विदेशों की वस्तु थी। इंटरनैट कोई नहीं जानता था। जैन धर्म का प्रगतिशील धर्म है। हर नई वस्तु को यह अपनाने को तैयार रहता है।

इस शताब्दी में जैन एकता को वहुत वल मिला। जिस का प्रमाण एक ध्वज, एक ग्रंथ व एक प्रतीक को मानना था। इस सदी में वहुत नई संभावनाओं को जन्म दिया। प्राचीन ग्रंथों का प्रकाशन वहुत संस्थाओं ने किया।

भारत व विदेशों में हुए समारोह व कार्यक्रम व उपलब्धियों का वर्णन मैंने जैन एकता के माध्यम से किया है। एक बात और जिस पर मैं ध्यान आकर्षित करना चाहता हू, वह है जैन धर्म के इतिहास ग्रंथों का लेखन। जैन आचार्यों का इतिहास, जैन धर्म का मौलिक इतिहास ; आचार्य देशभूषण, जैन धर्म का मौलिक इतिहास ८ खण्ड में आचार्य श्री हस्तीमल जी ने तैयार करवाया। ३२ आगम का हिन्दी प्रकाशन ३ मुनि श्री मिश्री मल जी के सम्पादन में ब्यावर से प्रकाशित हुआ। श्री जम्बू विजय ने श्री महावीर जैन विद्यालय मुम्बई के माध्यम से कुछ आगम को शुद्ध रूप से टीका सहित छपवाया। कई संस्थाओं को गुजरात में गुजराती अनुवाद सहित आगम प्रकाशित किए। एल.डी. शोध संस्थान अहमदावाद, श्री पार्श्वनाथ जैन पीठ वाराणसी, वैशाली जैन शोध संसथान प्राकृत भारती जयपुर, पच्चीसवीं महावीर जैन शताब्दी संयोजिका समिति पंजाब, भारतीय ज्ञान पीठ दिल्ली, अहिंसा मंदिर दिल्ली, भाषाओं में साहित्य की वाढ़ आ गई। श्री आत्मा नंद जैन सभा भावनगर ने पत्राचार में आगमों का टीका, निर्युक्तियां, चुर्णि, भाष्य प्रकाशित कर निशुल्क वांटे। आचार्य तुलसी व उनके शिष्यों ने अपना साहित्यक योगदान किया।

जैन इतिहास पर हुए कार्य ने जैन धर्म, जाति, परम्परा संस्कृत को एक शाश्वत पहचान प्रदान की। यही पहचान ने जैन धर्म को उनकी इतिहासक विरासत व उनकी भारतीय साहित्य के योगदान के प्रति अवगत कराया। आज वही पहचान कार्य कर रही है, जैन धर्म जो वोद्ध धर्म के वाद भारत का अल्पसंख्क धर्म है, जिस की पहचान समाप्ति पर थी इस समिति में हुए कार्यों के कारण इस धर्म को नए प्राण मिले। जैन धर्म का विदेशों में प्रथम वार प्रचार प्रसार

हुआ। सब से बडी बात यह हुई कि जैन धर्म में आपसी राग द्वेष की भावना जो सदियों से घर कर चुकी थी, इस वर्ष दम तोडने लगी। जिस का फल यह हुआ कि अब ऐसे साधु साध्वीयों को पसंद नहीं करता है जो सम्प्रदायक हो, न ही ऐसे गृहस्थ श्रावक को पसंद करता है जो आपसी वैर वैमनस्य का कारण बने। यह समिति की महान देन थी।

इस वर्ष सम्प्रदायिक साहित्य समाप्त हो गया। अपनी अपनी परम्परा में रह कर सब धर्मो का सन्मान इस शताब्दी वर्ष की महान देन है। अब सभी परम्परा के साधु साध्वियिां एक मंच पर प्रवचन करते हैं। जैन एकता को बढ़ावा देते हैं।

प्रकरण -७

हमारी संस्था द्वारा कुछ संस्थाओं का निर्माण

मैंने पिछले प्रकरणों में पंजाव में हमारे द्वारा स्थापित समिति व पंजाव सरकार स्थापित समिति के निर्माण का वर्णन किया है। हमारी २५वीं महावीर निर्वाण शताव्दी संयोजिका समिति पंजाव ने सरकारी समिति के कार्यों को कर वाकी अन्य उद्देश्यों के लिए स्वयं को समर्पित कर दिया। हमें अव पंजावी जैन साहित्य के लिए कार्य करना था। चाहे सरकारी समिति में कार्य करने थे। परन्तु दोनों महत्वपूर्ण कार्यों के प्रति किसी का ध्यान नहीं था। हमारे दोनों कार्यों को प्रवर्तक भण्डारी श्री पदम चन्द्र जी महाराज व स्व० उप्रवर्तनी साध्वी स्वर्णकांता जी महाराज का आशीवाद प्राप्त था। हम अपने लक्ष्य की ओर धीमी गति से वढ रहे थे।

जैन चेयर के लिए पत्र व्यवहार

हमारी समिति की स्थापना से यह हमारी प्रमुख मांग थी। इस की पृष्ट भूमि के पीछे डा० एल.एम. जोशी व भण्डारी श्री पदमचन्द जी महाराज की प्रेरणा काम कर रही थी। एक वात मजेदार थी कि लोग जैन चेयर का अर्थ ठीक ढंग से नहीं समझ रहे थे। पहले अपने लोगों को जैन चेयर का अर्थ। समझाने में काफी समय लग गया। इसी तरह लोग निर्वाण का अर्थ जन्मदिन करते या निर्वाण को निर्माण लिखते। यह सभी धर्म प्रचार की कमी के कारण हो रहा था। यह हालात जैन धर्म के सामान्य लोगों से लेकर आम लोगों तक थी। मुझे लगा कि लोग धर्म के प्रति जितनी आस्था रखते हैं उतना वह धर्म के मूल तत्वों से अनभिज्ञ हैं।

इस वर्ष में देश विदेशों में जैन चेयर प्रमुख विषय रहा। हमारे लिए यह नई बात नहीं थी, क्योंकि पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला में गुरू गोविन्द सिंह भवन का निर्माण हो चुका था इस भवन में एक कला दीर्घा गुरू गोविन्द सिंह जी के जीवन से संबंधित थी। पांच स्तम्भ भवन एक तालाब के मध्य में बनाए गए हैं। हर स्तंभ सिक्ख धर्म के ५ ककार का प्रतीक है। यह प्रतीक हैं : कंघा, कड़ा, कच्छा, कृपाण व केश। इन स्तंभ भवनों में पांच धर्मों को स्थान मिला। उनके नाम थे : हिन्दू धर्म, सिक्ख, बौद्ध, ईसाई, इस्लाम। पर दुख का विषय था कि जैन धर्म को छोड़ दिया गया था। भारत वर्ष में धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन कराने वाला यह एक मात्र भारत का संस्थान है। जैन चेयर ना होना हमारे लिए दुःख व क्षोभ का विषय था मैं व धर्म भ्राता रविन्द्र जैन इस संदर्भ में सरदार कृपाल सिंह नारंग को इस कार्य के लिए विशेष रूप से मिले उन्हें जैन धर्म लेखक मुनि सुशील कुमार की पुस्तक भेंट की। उन्होंने यह पुस्तक और हमारे द्वारा भेजा मांग पत्र स्व० डा० हरवंस सिंह प्रमुख धर्म अध्ययन को भेजा। कुछ दिनों बाद हमें एक पत्र लेकर उनसे मिले। उन्होंने मांग पत्र देख। हमारी बातों को ध्यान से सुना। उन्हें हमारी बात तथ्य पूरक लगी। डा० हरवंस सिंह एक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के प्रोफैसर थे जिन की आत्मा पवित्र थी। उनके मन में जैन धर्म व दर्शन के प्रति श्रद्धा थी। उन्हें विभाग की गलती का अहसास हुआ। उन्होंने डा० जोशी को बुलाया। डा० जोशी हमें विभाग में ले गए। उन्होंने हमें बताया जैन धर्म वैदिक काल से प्राचीन धर्म है। वेदों में भगवान ऋषभ देव का वर्णन आया है। प्रायः सभी पुराणों उपनिषदों में जैन धर्म का वर्णन है। सिन्धु घाटी के लोग भी इसी श्रमण धर्म को मानते थे। इसी श्रमण धर्म से

बौद्ध धर्म निकला है। स्वयं बौद्ध ग्रंथ भगवान पार्श्वनाथ के चतुंयाम व निगण्ट नाएपुत महावीर के वर्णन से भरे पडे हैं। हम बौद्ध धर्म और जैन धर्म का एक विभाग बनाने की बात करते हैं, जो श्रमण संस्कृति विभाग कहलाएगा।

डा० जोशी ने जो कहा वह सत्य था। पर जैन व बौद्ध धर्म एक नहीं हैं। वह एक दूसरे के काफी करीब हैं। इस दृष्टि से जैन धर्म पर अलग विभाग होना चाहिए। यह मेरा दृष्टिकोण था परन्तु अभी इस विभाग के खुलने का समय नहीं आया था। कुछ ही दिनों बाद हमें डा० जोशी का पत्र मिला। जिस से जैन चेयर के बारे में कुछ बात करने के लिए लिखा गया था। हम दोनों गए। उन्होंने हमें कहा "अभी यू.जी.सी. ने ५०००० रूपए गांधीवाद अहिंसा व जैन धर्म के प्राप्त हुआ है इस पैसे से एक लैकचरार रख लेते हैं।

हमें इस समाचार से अभूतपूर्व प्रसन्नता हुई। हमारे लिए जैन विभाग का खुलना चेयर से कम नहीं था। जल्द ही उन्होंने वैशाली प्राकृत जैन शोध संस्थान के डा० अतुलनाथ सिन्हां की नियुक्ति हो गई। अब इस विश्वविद्यालय में जैन धर्म की पढ़ाई अन्य धर्मों की तरह चालू हो गई और आज भी चालू है। यह स्वतंत्र विभाग न था ये गुरू गोबिन्द सिंह तुलनात्मक अध्ययन विभाग का अंग था। पर इस कार्य की शुरूआत अच्छी रहीं। डा० सिन्हा प्राकृत भाषा के विद्वान हैं उन्होंने वाराणसी में भी शिक्षण कार्य किया है। वह जै धर्म व बौद्ध धर्म के प्रकाण्ड़ पंडित हैं।

उनके आने से भण्डारी श्री पदमचन्द्र जी महार.. सरगर्म हो गए। हजारों रूपयों के ग्रंथ लाईब्रेरी के लिए पहुंचाने शुरू किये। जिस में सभी सम्प्रदायों के ग्रंथ थे। हमारी गुरूणी श्री स्वर्णकांता जी महाराज ने भी भारतीय ज्ञान पीठ देहली का समस्त दिगम्बर साहित्य इस विभाग को

भेंट किया। उन्होंने अपना हस्तलिखित भण्डार यूनिवर्सिटी को दान कर दिया। तेरापंथ समाज संगरूर के माध्यम से तेरापंथी जैन साहित्य पहुंचने लगा। धीरे धीरे इतना साहित्य हो गया कि जैन विभाग की लाईब्रेरी हर विभाग की लाईब्रेरी से वडी हो गई। जिस समय पंजाव के राज्यपाल श्री एम. एस. चौधरी पधारे उस समय यूनिवर्सिटी ने २५०० साला महोत्सव पर डा० नथ मल टाटीया जो डा० सिन्हा के गुरू थे उन्हें प्रवचन के लिए आमंत्रित किया गया। इस समारोह में यूनिवर्सिटी में प्रथम जैन समारोह हुआ। डा० नथ मल टाटीया का सारा जीवन जैन धर्म, दर्शन पढ़ाने में वीता। वह वैशाली शोध संस्थान के निर्देशक भी रहे। जैन विश्व भारती लाडनूं में अंतिम समय तक रहे। वहां Visiting Professor के रूप में विदेशों में जैन धर्म पढ़ाते रहे। इस अवसर पर जैनईज्म पुस्तक का विमोचन राज्यपाल ने किया। डा० टाटीया भाषण वहुत महत्वपूर्ण था जिसे यूनिवर्सिटी ने प्रकाशित किया। इस अवसर पर उपाध्याय श्री अमर मुनि जी हिन्दी पुस्तक "महावीर सिद्धांत और उपदेश" का पंजावी भाषा में अनुवाद माननीय राज्यपाल को भेंट किया गया। माननीय राज्यपाल ने एक जैन पुस्तक प्रदर्शनी व हस्तलिखित ग्रंथों की प्रदर्शनी का उद्घाटन भी किया था। इसे यूनिवर्सिटी ने जैन कोरनर का नाम दिया। डा० सिन्हा के आगमन से यूनिवर्सिटी में हमें अनेकों वार आना पडा। डा० सिन्हा व डा० जोशी को हमने अपने समाज के प्रमुख साधु साध्वियों, श्रावकों से मिलवाया है। यूनिवर्सिटी के अधिकारीयों से पता चला कि आप का विभाग तो खुल गया है पर जैन चेयर नहीं। हम ने इस संदर्भ में डा० एल.एम. जोशी की सहायता प्राप्त की। उन्होंने चेयर का प्रारूप तैयार किया। फिर अपनी विभागीय सिफारिश भी की। इस प्रारूप

में एक प्रोफैसर, एक रीडर, एक रिसर्च फैलो व सेवादार की सिफारिश की गई। वर्ष का मिसलेनियस ५०,००० खर्चने की सिफारिश की गई थी। हमें केस की एक प्रति दी गई जिसे हमने शिक्षा मंत्री श्री गुरमेल सिंह से सिफारिश करने का डी. पी.आई पंजाव को पहुंचा दिया। यूनिवर्सिटी के प्रारूप को यथा रूप मंजूरी मिल गई। पर यह कार्य निर्वाण शताब्दी के वाद हुआ।

जैन चेयर की स्थापना व समारोह

आखिरकार जैन चेयर की मंजूरी मिल गई। फिर आया किसी योग्य व्यक्ति की नियुक्ति का प्रश्न। समाचार पत्रों में प्रोफैसर की नौकरी के लिए विज्ञापन दिया गया। लम्वी तलाश की गई। विद्वानों से संपर्क किया गया। इस विज्ञापन के आधार पर मात्र ३ नाम आए। पर पधारे २ महानुभाव पर इस संदर्भ में एक वात और कहनी है। कि यहां के उप-कुलपति जर्मन गए हुए थे, यहां उन्होंने एक जर्मन प्रोफैसर को जैन प्रोफैसर की भारत में नियुक्ति की वात की थी। यह प्रोफैसर थे डा० कलासि ब्रुन जो जैन धर्म दर्शन, तत्व के महान ज्ञाता थे। उनके ज्यादा शिष्य उनके देश के जर्मन लोग थे। यह लोग प्राकृत भाषा को जानने के लिए जैन धर्म को पढ़ते हैं, उनके शिष्यों में से एक गुजरात का भारतीय डा० वी.वी. भट्ट थे। डा० कलास ब्रुन ने उनकी योग्यता की प्रशंसा करने हुए अंतर्राष्ट्रीयि लेखक वताया। डा० भट्ट भी इसी इंटरव्यू में आ गए। दूसरे सज्जन थे डा. के. रिषभ चन्द्र। डा० भट्ट की अंग्रेजी वहुत अच्छी थी। वह जर्मन, फ्रैंच, हिन्दी, गुजराती, संस्कृत, अंग्रेजी, प्राकृत भाषा के महान विद्वान भी थे। अंतर्राष्ट्रीयि

स्तर पर उनकी अपनी पहचान थी।

इस चेयर पर उनकी नियुक्ति हो गई। डा. भट्ट सपरिवार पटियाला में आ गए। अब चेयर के उद्घाटन का प्रोग्राम था। यह प्रोग्राम हमारी सहाल से तैयार किया गया। इस अवसर पर माननीय राज्यपाल श्री जय सुख लाल पधारे। बहुत ही महत्वपूर्ण प्रोग्राम इस चेयर के उद्घाटन का था। राज्यपाल ने प्रभु महावीर की प्रतिमा को मालार्पण किया। यह प्रतिमा आचार्य समुद्र विजय जी महाराज ने इस विभाग को भेंट की थी जो अब भी विभाग में है।

दूसरा उपक्रम था इस संस्था के अंतरगंत प्राकृत भाषा के प्राकण्ड पंडित आचार्य आत्मा राम जी महाराज की पुनः स्मृति में आचार्य श्री आत्मा राम जैन भाषण माला का आयोजन की स्थापना। इस भाषण माला की प्रेरणा प्रवर्तक श्री फूल चंद जी महाराज ने की थी। जिस के लिए धन श्री चन्दन बाला जैन श्राविका संघ ने अर्पित किया था। इस भाषण माला का उद्घाटन आचार्य आत्मा राम जी महाराज के चित्र को मालार्पण करके किया गया। आचार्य श्री के विदेशी शिष्य ने दिया। इस अवसर पर बहुत ग्रंथों के सैट महानुभावों को भेंट किए गए। इस अवसर पर जर्मन के एक विदेशी विद्वान व जर्मन के राजदूत एक महिला पधारी थी।

उस दिन ३ समारोह हुए थे। दोपहर के बाद विद्वानों का समारोह हुआ। जिस में मैंने ५०००/- रूपए का चैक धर्म अध्ययन विभाग के अध्यक्ष को भेंट किया। सारी व्यवस्था डा० भट्ट ने स्वयं की थी। इस अवसर पर विदेशी प्रतिनिधियों का लैक्चर हुए। इस अवसर पर डा० रोथ विशेष रूप में पधारे। डा० रोथ आचार्य श्री आत्मा राम जी से प्रभावित थे। आप डा० हर्मन जैकोबी की परम्परा से थे। समारोह बहुत रंगीन था। समस्त उत्तर भारत से लोग पधारे

थे। डा० भट्ट का पहला समारोह था। उनके आने के बाद इस चेयर को उन्होंने गुरू गोविन्द सिंह भवन से स्वतंत्र विभाग बना दिया। उन्होंने इस भवन का नाम "महावीर चेयर फार जैन स्टडीज" रखा। वह इस संस्था के प्रथम निर्देशक बने। डा० भट्ट के पास पुस्तकों की अथाह सम्पदा थी। भारतीय अंतर्राष्ट्रीय विद्वानों से उनका अच्छा परिचय था। अनेकों विदेशी विद्वान उनके मित्र थे। अनेकों शोध पत्र पत्रिकाओं में अनके शोध निबंध व समीक्षाएं प्रकाशित होती रहती हैं। अनेकों देशों में भारतीय व जैन विषयों पर उनके प्रवचन होते हैं। उनकी प्रेरणा से हमारी समिति ने अनेक कार्य किए हैं। इस में साहित्य की दृष्टि से युनिवर्सिटी में लाईब्रेरी की स्थापना प्रमुख थी।

इसी समारोह में भगवान महावीर की अंतिम देशना की उत्राध्ययन का विमोचन माननीय राज्यपाल ने अपने कर कमलों से किया।इस ग्रंथ का पंजाबी अनुवाद की प्रेरणा हमें डा० जोशी की कृति धम्मपद से मिली थी। दोनों ग्रंथ श्रमण संस्कृति के पावन ग्रंथ थे। इस ग्रंथ में जो श्रम हम ने किया वह महत्त्वपूर्ण था परन्तु इस ग्रंथ के हर पृष्ट को श्रमण उपाध्याय श्री फूल चंद जी महाराज ने पंडित तिलकधर शास्त्री से सुना था। जरूरत अनुसार श्रमण जी ने संशोधन किया। यह शास्त्र पंडित अर्धमागधी प्राकृत से अनुवादित प्रथम ग्रंथ था, जिस के प्रकाशन के बाद हम पंजाबी भाषा के प्रथम अनुवादक, संपादक, टीकाकार बन गए। हमारे से पहले यह सौभाग्य किसी साधु या श्रावक को प्राप्त नहीं हुआ था। पंजाबी विश्वविद्यालय में किसी जैन शास्त्र का यह प्रथम विमोचन था। इस संसार में अर्ध मागधी भाषा के सब रूप आयु के अनुवादक थे। यह समारोह जैन चेयर के उद्घाटन पर ही हुआ। जिसे कई

समाचार पत्रों ने स्थान दिया। जैन चेयर की स्थापना से हमारा जैन समाज में अनोखा स्थान वन गया। इस का कारण यह था कि हम दोने की आयु सभी कार्यकर्ताओं से कम थी। अव हम दोनों डा० भट्ट का परिचय जैन समाज के प्रमुख मुनियों, आचार्यों, उपाध्याय, साधु, साध्वियों से करवाया।

गुजरात में जन्मे डा० भट्ट ने जैन धर्म निक्षेप सिद्धांत पर विदेशों में रह कर कार्य किया है। उन के माध्यम से पता चला कि विदेशों में जैन धर्म पर दो सदीयों से काफी कार्य हुआ है। यह शोध कार्य अंग्रजी से पहले का है। इस का कारण जर्मन भाषा व संस्कृत में शोध कार्य काफी मात्रा में होता आया है। आज जर्मन के विश्वविद्यालयों में जैन धर्म, भाषा विज्ञान के रूप में पढाया जाता है। जर्मन में जैन धर्म पर शोध करने का ढंग अनुपम व प्रमाणित है।

डा० भट्ट विद्वान होने के साथ साथ सामाजिक व्यक्ति भी हैं। उन्होंने सारे भारत के प्रमुख आचार्यों में अपनी पहचान, अपने शोध कार्य के माध्यम से वनाई है। जैन चेयर हमारी गतिविधियों का केन्द्र वन चुका था। इस चेयर के अंतर्गत हमने कई संस्थाओं का निर्माण किया था। इन का वर्णन करने से पहले मैं वताना चाहता हूं कि डा० भट्ट ने यूनिवर्सिटी में ३ दिन का समारोह "एन अनली जैनीज्म" पर रखा। सैंकड़ों विद्वान भारत के कोने कोने से पधारे थे। मुझे इसी समय वैशाल, जयपुर, अहमदावाद, पुणे, नलंदा, दिल्ली, वाराणसी, मेरठ, मद्रास से पधारे प्रमुख जैन विद्वानें को मिलने का अवसर मिला। हमारे द्वारा उन्हें अपना पंजावी साहित्य भेंट किया गया। इस सम्मेलन में जो विद्वान नहीं आए थे उनके पेपर पढ़े गए। सभी पेपर किसी कारण प्रकाशित नहीं हो सके। पर हमारे जीवन में ऐसा

पहला अवसर था जब इतने विद्वानें के दर्शन व उन्हें सुनने का सौभग्य मिला। डा० भट्ट जितना समय इस चेयर पर रहे, सारी व्यवस्था ठीक चली। उनके वापिस जर्मन लौटने पर अभी यह चेयर खाली है।

जैनोलिजकल रिसर्च कौंसिल की स्थापना :

२५००वें महावीर निर्वाण शताब्दी के शुभ अवसर पर मेरे मन में एक ख्याल आया कि जैन विद्वानों की एक भारतीय संस्था का निर्माण हो, जो आपसी संपर्क का माध्यम बने। जैन शोध के कार्य की सूचना का आदान प्रदान करे। इसी बात को ध्यान में रख कर गुरूणी साध्वी स्वर्णकांता जी महाराज की प्रेरणा से इस कौंसिल की स्थापना की गई। इस में जैन विद्वानों को ही शामिल किया जाता। हमारी यह कोशिश को बहुत कम सफलता मिली। इस कार्य जिस ढंग से हम चाहते थे आगे न बढ़ सका। यह एक कटु अनुभव था। पर इस संस्था के माध्यम से हम विद्वानों से जुड़ गए। पत्र व्यवहार बना। हम इस का उपयोग पंजाबी जैन साहित्य लिए भी करना चाहते थे, जो प्रायः असम्भव था। क्योंकि जैन विद्वान इस क्षेत्रिय भाषा से अपरिचित थे। मैं इस का डायरैक्टर बना। इस संस्था के स्व० सेठ भोज राज जैन संरक्षक बने। इस के सचिव मेरे धर्मभ्राता रविन्द्र जैन थे। सारे भारत में हर भाषा में जैन साहित्य उपलब्ध है पर पंजाबी में किसी ने कलम नही उठाई। हमें साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज की बलवती प्रेरणा, सहयोग संरक्षण सतत् मिलता रहा। साध्वी श्री पंजाबी साहित्य की उपयोगिता को अच्छी तरह पहचानती थी। वह ग्रामों में धर्म प्रचार करने वाली साध्वी थी। हमारे हर कार्य में हमारा उत्साह बढ़ाती थी। उनके उपकार मेरे जीवन आचार्य तुलसी के शिष्य

जयचन्द्र जी के वाद सव से ज्यादा है।

आचार्य श्री आत्मा राम जैन भाषण माला की स्थापना - ३

श्री श्वेताम्वर स्थानक वासी जैन परम्परा में आचार्य श्री आत्मा राम जी महाराज का अपना स्थान है। वह आचार्य अमर सिंह जी महाराज की परम्परा के आचार्य थे। उनके गुरू श्री शालिग राम जी थे। आप का जन्म राहों के क्षत्रिय परिवार में चोपडा वंश में सेठ मनसा राम व माता परमेश्वरी देवी के यहां हुआ। अल्पायु में माता पिता का साया सिर से उठ गया। आप के पालन पोषण की जिम्मेवारी आप की दादी ने निभाई कुछ समय के वाद वह भी स्वर्ग सिधार गई। वालक आत्मा राम संसार में अकेले पड गए। उनको संसार की क्षणभंगुरता का अहसास हुआ। उन्हें वचपन में ही जैन मुनियों को सुनने का अवसर मिला। जिस के कारण वैराग्य के रंग और पक्का होने लगा। छोटी सी आयु में आप ने साधु जीवन अंगीकार कर दीक्षा स्वीकार की। फिर स्वयं को शास्त्र पठन पाठन में इतना लगाया कि जीवन के अंतिम वर्षों में वह दृष्टिहीन हो गए पर तव तक वह २० आगमों पर हिन्दी टीका संस्कृत छाया सहित लिख चुके थे। इन कुछ प्रकाशन इनके स्वर्गारोहण के वाद भी प्रकाशित हुए। वह श्रमण संघ के प्रथम आचार्य घोषित हुए। उनके सम्मान में २२ स्थानक वासी आचार्यों ने अपने पद की चादर जैन एकता के लिए उतार कर इन्हें समर्पित कर दी। उन को आचार्य पद इन की अनुपस्थिति में सर्वसम्मति से दिया गया। आप ने अनेकों भव्य आत्माओं को दीक्षा देकर मोक्ष का रास्ता वताया। इन में कुछ के नाम उल्लेखनीय हैं जैसे कि प. हेम चन्द्र जी महाराज, श्री खजान चंद जी

महाराज, श्री रत्न मुनि जी महाराज, श्री ज्ञान मुनि जी (१) महाराज, श्री ज्ञान मुनि जी महाराज (२) उपाध्याय मनोहर मुनि जी, पंडित हेम चन्द जी के शिष्य भण्डारी श्री पद्म चन्द जी महाराज धर्म प्रभावक थे। पं. खजान चंद्र जी ने स्त्री शिक्षा के लिए स्कूलों व जैन स्थानकों का जाल विछा दिया। उनके शिष्य प्रवर्तक श्री फूलचंद जी 'श्रमण' थे। जिन्होंने अपने बाबा गुरू के स्थानांग सूत्र, उपासक दशांग सूत्र का प्रकाशन करवाया। पूज्य श्री ज्ञान मुनि (२) पहुंचे साधु थे। आप ने अपने गुरू की परम्परा को आगे बढाते हुए अनेकों आगमों पर स्वयं टीका लिखीं हैं। श्री ज्ञान मुनि जी ने अनेकों परोपकारी संस्थाओं का निर्माण भी विभिन्न स्थलों पर करवाया है। प्रवर्तक भण्डारी श्री पदम चन्द जी महाराज के शिष्य उपप्रवर्तक श्री अमर मुनि जी महाराज ने सचित्र आगम प्रकाशन अंग्रजी, हिन्दी भाषा में करवाया है। पूज्य श्री ज्ञान मुनि जी के प्रमुख शिष्य डा० शिव मुनि जी महाराज आज कल श्रमण संघ के चतुर्थ आचार्य पटधर के रूप में समाज में ध्यान व समाधि के माध्यम से नव चेतना का संचार कर रहे हैं। स्व० श्री खजान चन्द्र जी महाराज के एक शिष्य श्री त्रिलोक मुनि जी महाराज जो कि जैन आगमों के महान् विद्वान व समाज सुधारक हैं उन्होंने ने भी अनेकों परोपकारी संस्थाओं का निर्माण किया।

आचार्य श्री आत्मा राम जी महाराज ने उस समय हिन्दी भाषा का प्रचार किया जब कि पुराने पंजाब में उर्दू, फारसी व अंग्रजी का जोर था। आपने लाहोर औरीएंटल कालिज के लिए प्राकृत भाषा का सिलेवस तैयार किया। आपने आगमों के अतिरिक्त ६० ग्रन्थ हिन्दी भाषा को प्रदान किए हैं। जो कि जैन धर्म के विभिन्न विषयों पर आधारित हैं। आप की जैन धर्म साहित्य व संस्कृति को महान देन हैं

जिसको जैन समाज सदैव याद रखेगा। आप ने श्वेताम्बर स्थानक वासी समाज में टीका, चूर्णि, निर्युक्ति, भाष्य व संस्कृत पढ़ने की परम्परा डाली, ताकि लोग शास्त्रों को ठीक ढंग से समझ सकें। आप पहले पंजाव जैन संघ के उपाध्याय वने फिर आचार्य। फिर आप को समस्त जैन समाज ने श्रमण संघ का प्रथम आचार्य सम्राट नियुक्त किया। आप हिन्दी भाषा में जैन आगमों के प्रथम टीकाकार हैं। आप ने अनेकों देशी विदेशी विद्वानों को अपने आगम ज्ञान व चमत्कारों से प्रभावित किया। आप ध्यान योगी थे। हमेशा आप का जीवन श्री संघ को आगे वढाने की योजनाओं में लगा रहता। कैंसर जैसा रोग आ जाने पर भी आप इस का आप्रेशन विना कलोरोफोरम सूंघे करवाया। आप की सहनशीलता ला-मिसाल थे। आप कभी किसी में दोष नहीं देखते थे। अंत रामय आप के शरीर को वीमारीयों ने इतना घेरा कि लोग आचार्य श्री से पूछते कि क्या वात है ? आप जैसे महापुरूषों को रोग क्यों घेरता है ? आप तो हमेशा ध्यानस्थ रहने वाले हैं। यह वात हमारी समझ से परे है ?

महाराज श्री जी फुरमाते "भव्य जीवो ! मैं अपने कर्मों का कर्जा इस धरती पर उतारना चाहता हूं। मरने के वाद भी हम कर्जदार रहें, फिर इस साधना का क्या फल ? हर दुःख से मेरे कर्म झड़ते हैं। इस प्रक्रिया से मुझे समाधि प्राप्त होती है।"

आचार्य श्री महान राष्ट्र भक्त थे। भारत के वड़े वड़े राज नेता इन से विमर्श करने आते थे। इन से कई विषयों पर विमर्श करते थे। आपने आजादी की लड़ाई में अपना योगदान डाला। पंडित जवाहर लाल नेहरू रावल पिंडी में आप से मार्ग दर्शन प्राप्त करने आए। ३० जनवरी १९६२ को आप का समाधि मरण लुधियाना में हुआ। इतने महान